Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 3, April-2022, ISSN 2230-7540

प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के शिक्षण दृष्टिकोण का एक महत्वपूर्ण अध्ययन

Gaurav Verma[1]*, Dr. Ramavtar Singh[2]

[1] Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

[2] Professor, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

***सार** - यह अध्ययन प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण की आलोचनात्मक जांच करता है, जिसमें इन दृष्टिकोणों को आकार देने वाले कारकों और शिक्षण प्रथाओं और छात्र परिणामों के लिए उनके निहितार्थ को समझने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। शिक्षकों के दृष्टिकोण को आकार देने वाले विशिष्ट कारकों में गहराई तक जाने और प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के लिए प्रभावी रणनीतियों का पता लगाने के लिए शोध की आवश्यकता है।*

***कीवर्ड** - प्राथमिक विद्यालय, शिक्षण, दृष्टिकोण, छात्र.*

----------X----------

1. परिचय

शिक्षा वह प्रकाश है जो जीवन से अंधकार को दूर करती है और बच्चे के सर्वांगीण विकास पर ध्यान केंद्रित करती है। यह एक त्रि-ध्रुवीय प्रक्रिया है। इसमें छात्र, शिक्षक और सामाजिक परिवेश के बीच अंतःक्रिया शामिल है। ये तीन घटक बेहतर शिक्षा के लिए समान रूप से जिम्मेदार हैं।[1]

शिक्षा को एक शक्तिशाली एजेंसी के रूप में माना जाता है, जो एक राष्ट्र के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में वांछित परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है (हुसैन, 2004)। शिक्षा के बारे में स्वामी विवेकानंद का विचार आज भी शिक्षा दर्शन में मील का पत्थर है, जब वे कहते हैं। "शिक्षा पुरुषों में पहले से ही पूर्णता की अभिव्यक्ति है"। यह सच है कि शिक्षा में हमारा अंतिम उद्देश्य छात्र से उस पूर्णता को बाहर लाना और उसे समाज की भलाई के लिए लगाना है।[2-3]

शिक्षक की भूमिका

"जब एक छात्र की असीमित क्षमता एक शिक्षक की मुक्ति कला से मिलती है, तो एक चमत्कार सामने आता है", एजुकेशन इंटरनेशनल के अध्यक्ष मैरी हैटवुड फ्यूट्रेल का बयान, पत्रों के लिए बहुत सही लगता है। यह सही है जब स्वामी विवेकानंद शिक्षकों की भूमिका की याद दिलाते हैं। उनके लिए "शिक्षा मनुष्य में पहले से ही पूर्णता की अभिव्यक्ति है"। गुरु का एकमात्र कर्तव्य मार्ग को साफ करके बाधा को हटाना है।[4]

अपने बेटे के शिक्षक को लिखे अब्राहम लिंकन के पत्र को उद्धृत करना उचित है जो दर्शाता है कि शिक्षक माता-पिता किस भूमिका की अपेक्षा करते हैं: "उसे अपने विचारों में विश्वास करना सिखाएं। उसे सिखाओ कि वह चिल्लाती भीड़ के लिए अपने कान बंद कर ले और अगर वह सही समझे तो खड़े होकर लड़ना सिखाए। उसे हमेशा मानव जाति में उदात्त विश्वास रखना सिखाएं। महर्षि अरबिंदो ने शिक्षा के तीन सिद्धांतों को प्रतिपादित किया है जो एक शिक्षक की भूमिका को बहुत अच्छी तरह से परिभाषित करते हैं।[5]

शिक्षण पर सकारात्मक शिक्षण दृष्टिकोण का प्रभाव

एक सकारात्मक अनुकूल शिक्षण रवैया शिक्षण को न केवल आसान बनाता है बल्कि अधिक संतोषजनक और पेशेवर रूप से पुरस्कृत भी करता है। स्वाभाविक रूप से, शिक्षण के प्रति अनुकूल दृष्टिकोण वाला शिक्षक इतने सारे

www.ignited.in

मामलों में बहुत शक्तिशाली भूमिका निभाता है। इसलिए शिक्षक को सकारात्मक शिक्षण दृष्टिकोण रखना चाहिए ताकि वह पूरी पीढ़ी का मार्गदर्शन कर सके। इस प्रकार वह न केवल छात्रों, संस्था, समाज और राष्ट्र के स्तर के उत्थान के लिए काम करेगा बल्कि वह स्वयं के स्तर को भी ऊपर उठाएगा। यह अधिक समर्पण को बढ़ाएगा क्योंकि वह समाज में समायोजन और सम्मान का आनंद उठाएगा और इस तरह वह स्वस्थ, शिक्षित और सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकेंगे। वही सच्चा राष्ट्र निर्माता होगा जिसकी अपेक्षा समाज और राष्ट्र उससे करता है।एक शिक्षक एक शिक्षक के रूप में अपने कर्तव्य का पालन कैसे करता है यह काफी हद तक उसके दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। शिक्षक के शिक्षण दृष्टिकोण के साथ उसकी कार्य-सन्तुष्टि भी घनिष्ठ रूप से जुड़ी होती है। यदि कोई व्यक्ति यह मानता है कि उसका पेशा उसके मूल्यों और विश्वासों को साकार कर रहा है, यदि वह अपने पेशे में आदर्शों तक पहुँच गया है, तो वह अपने पेशे के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करता है और अधिक संतुष्टि प्राप्त करता है। इसका उल्टा भी सच है।[6-7]

"कार्य संतुष्टि एक कर्मचारी के विभिन्न दृष्टिकोणों का परिणाम है"। सकारात्मक शिक्षण दृष्टिकोण कार्य संतुष्टि में योगदान कर सकता है क्योंकि कार्य संतुष्टि एक सामान्य दृष्टिकोण है जिसमें कई दृष्टिकोण शामिल होते हैं।[8]

अतः हम कह सकते हैं कि यदि एक शिक्षक का शिक्षण दृष्टिकोण सकारात्मक है तो यह माना जाता है कि वह नौकरी से संतुष्ट है और एक शिक्षक अपनी नौकरी से संतुष्ट है या एक शिक्षक जो अपनी नौकरी से खुश है वह भविष्य की बेहतरी के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पीढ़ी, समाज और राष्ट्र। यह सच है कि एक अच्छी तरह से समायोजित और संतुष्ट शिक्षक ही बहुत योगदान दे सकता है और एक मजबूत राष्ट्र के सपने को साकार कर सकता है.[9]

शिक्षण पर नकारात्मक शिक्षण दृष्टिकोण का प्रभाव

एक नकारात्मक प्रतिकूल शिक्षण रवैया शिक्षण कार्य को कठिन, अधिक थकाऊ और अप्रिय बना देता है। शिक्षकों के सकारात्मक शिक्षण दृष्टिकोण न रखने के कई कारण हो सकते हैं-कक्षा का दबाव, प्रधानाध्यापक, माता-पिता, वेतन, पदोन्नति की सीमित संभावनाएँ आदि शिक्षकों को एक साथ कई गतिविधियाँ करने के लिए बाध्य करते हैं और शिक्षकों को अप्रत्याशित वातावरण का सामना करने की आवश्यकता होती है।[10]

2. सामग्री और तरीके

तरीका

अध्ययन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, मानक सर्वेक्षण पद्धति को सबसे उपयुक्त विधि पाया गया क्योंकि जांच मुख्य रूप से वर्तमान में मौजूद स्थितियों और संबंधों से संबंधित थी। यह पूरी तरह से एक विशेष समय में अपेक्षाकृत बड़ी संख्या में मामलों से संबंधित है और नमूने के माध्यम से जनसंख्या के बारे में सामान्यीकृत सांख्यिकी देता है। वर्तमान जांच अनुसंधान के मानक सर्वेक्षण पद्धति के लिए आवश्यक चरणों और विशेषताओं का उपयोग करने का प्रयास करती है।

जनसंख्या

जनसंख्या या ब्रह्मांड का अर्थ है, अवलोकनों का संपूर्ण द्रव्यमान, जो मूल समूह है जिसमें से एक प्रतिनिधि नमूना डेटा के संग्रह के लिए चुना जाता है और जिसके लिए शोधकर्ता निष्कर्षों पर निकलता है।

वर्तमान संदर्भ में, छतरपुर जिले के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों ने लक्ष्य जनसंख्या का गठन किया। ये शिक्षक पुरुष और महिला दोनों थे। वे शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के स्कूलों से ताल्लुक रखते थे।

नमूना

नमूना अध्ययन करने के लिए एक आवश्यक उपकरण है इसलिए जनसंख्या से एक नमूने का चयन करना आवश्यक है। जनसंख्या से चुना गया एक नमूना लगभग सभी विशेषताओं में पूरी आबादी का सच्चा प्रतिनिधि होना चाहिए। यदि ऐसा नहीं है, तो नमूने से प्राप्त परिणामों को वैध रूप से सामान्यीकृत नहीं किया जा सकता है। इसलिए वैध और विश्वसनीय परिणाम प्राप्त करने के लिए नमूने के चयन का पर्याप्त प्रतिनिधि आवश्यक है।

नमूनाकरण ब्रह्मांड से नमूने के चयन की प्रक्रिया है। आदर्श प्रतिचयन ऐसा होना चाहिए कि अनुमान की त्रुटि कम से कम हो। इसके अलावा इसे निष्पक्ष रूप से चुना जाना चाहिए।

www.ignited.in

डेटा संग्रह के लिए अपनाई गई प्रक्रिया

किसी भी शोध कार्य में प्रतिदर्श से प्राप्त आंकड़ों का संग्रह एक महत्वपूर्ण कार्य होता है। अनुसंधानकर्ता शोध समस्या के अध्ययन की विश्वसनीयता के लिए आँकड़ों का संग्रह करता है। ये आँकड़े शोध कार्य का आधार होते हैं।

इसलिए, एकत्रित डेटा एक शोध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यही कारण है कि प्रस्तुत अध्ययन में भी शोधकर्ता द्वारा आँकड़े एकत्रित किये गये हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़ों के संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। इस विधि का उपयोग सामाजिक एवं शैक्षिक क्षेत्र की समस्या से संबंधित आँकड़ों के संग्रह के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में किया जाता है।

टीचिंग एटीट्यूड इन्वेंटरी और जॉब संतुष्टि स्केल डेटा के प्रशासन के माध्यम से डेटा एकत्र किया गया है। इसके लिए शोधार्थी ने व्यक्तिगत रूप से भ्रमण किया तथा चयनित प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों से स्वयं सम्पर्क किया। उसने उन्हें दोनों उपकरणों के उद्देश्य और रूप के बारे में आश्वस्त किया। फिर विषयों को टीएआई उत्तर पुस्तिका में दिए गए निर्देशों को पढ़ने के बाद, टीएआई उत्तर पत्रक में आइटम से पहले दिए गए वांछित वर्ग में (□) चिह्न लगाकर व्यक्तिगत जानकारी भरने के लिए कहा।

सांख्यिकीय तकनीकें

अपरिष्कृत प्राप्तांकों को अर्थपूर्ण बनाने तथा प्राप्तांकों के महत्व का परीक्षण करने के लिए सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया जाता है। सांख्यिकीय तकनीकों के उपयोग के बिना कच्चे अंकों का अपना अर्थ और वजन नहीं होता है।

विभिन्न प्रकार की सांख्यिकीय तकनीकें उपलब्ध हैं जिनका उपयोग सांख्यिकीय उपचार के लिए किया जा सकता है, शोध समस्या की प्रकृति और उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने निम्नलिखित सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग किया है:

(असमूहीकृत डेटा के लिए सूत्र, बड़ा नमूना)

(1) माध्य

एम = □एक्स / एन

जहां, एक्स = स्कोर

∑ एक्स = स्कोर का योग

एन = अंकों की संख्या

(2) **मानक विचलन**

$$\text{एस.डी.} = \sqrt{\frac{\sum(\text{एक्स} - \text{एम})^2}{\text{एन}}}$$

जहाँ, एक्स' = (एक्स - एम) = माध्य से विचलन

मतलब एन = अंकों की संख्या

(3) **माध्य की मानक त्रुटि**

$$\text{सेम या } \sigma \text{ मी} = \sigma/\sqrt{\text{एन}}$$

जहाँ, σ एम = मानक त्रुटि या माध्य

σ = मानक विचलन (एसडी)

एन = अंकों की संख्या

3. परिणाम

तालिका 1

शहरी पुरुष शिक्षकों और ग्रामीण पुरुष शिक्षकों के शिक्षण दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन

एस.एन.	समूह	एन	एम	एस.डी.	एसईएम	टी मूल्य	स्तर का महत्व		परिकल्पना	
							0.05	0.01	0.05	0.01
							1.97	2.59		
1	शहरी स्कूल पुरुष शिक्षक	125	286.49	21.35	1.9	2.73	महत्वपूर्ण	महत्वपूर्ण	ठुकरा दिया	ठुकरा दिया
2	ग्रामीण विद्यालय पुरुष शिक्षक	125	278.52	24.67	2.2					

परिकल्पना (एच02) जिसमें कहा गया है कि प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के लिंग के आधार पर उनके शिक्षण दृष्टिकोण में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। तदनुसार शहरी पुरुष शिक्षकों और ग्रामीण पुरुष शिक्षकों के बीच 'टी' परीक्षण की गणना की गई और यह 0.01

www.ignited.in

स्तर पर सार्थक पाया गया। इसका तात्पर्य यह है कि शहरी और ग्रामीण पुरुष शिक्षकों के बीच शिक्षण दृष्टिकोण काफी भिन्न है।

इससे पता चलता है कि परिकल्पना (एच02) को अस्वीकार कर दिया गया है और इसका पहला पहलू, सेक्स से संबंधित शिक्षण दृष्टिकोण को प्रभावित कर रहा है। शहरी और ग्रामीण पुरुष शिक्षकों के शिक्षण दृष्टिकोण के मीन और एसडी स्कोर के बीच तुलना भी निम्नलिखित आकृति में प्रस्तुत की गई है।

तालिका 2

शहरी पुरुष शिक्षकों और शहरी महिला शिक्षकों के शिक्षण दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन

एस.एन.	समूह	एन	एम	एस.डी.	एसईएम	टी मूल्य	स्तर का महत्व		परिकल्पना	
							0.05	0.01	0.05	0.01
							1.97	2.59		
1	शहरी स्कूल पुरुष शिक्षक	125	286.49	21.35	1.9	1.50	महत्वपूर्ण नही है	महत्वपूर्ण नही है	स्वीकार किया	A स्वीकार किया
2	शहरी स्कूल महिला शिक्षक	125	282.36	22.01	1.9					

परिकल्पना (एच01) जो यह दावा करती है कि प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के लिंग के आधार पर उनके शिक्षण दृष्टिकोण के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

तदनुसार शहरी पुरुष शिक्षकों और शहरी महिला शिक्षकों के बीच 'टी' परीक्षण की गणना की गई और यह 0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया। यह इंगित करता है कि शहरी पुरुष और महिला शिक्षकों के बीच शिक्षण दृष्टिकोण काफी भिन्न है।

इसका अर्थ है कि परिकल्पना (एच02) को अस्वीकृत किया जाता है और यह खुलासा किया जाता है कि इसका दूसरा पहलू, सेक्स से संबंधित शिक्षण दृष्टिकोण को प्रभावित कर रहा है। शहरी पुरुष और महिला शिक्षकों के शिक्षण दृष्टिकोण के मीन और एसडी स्कोर के बीच तुलना भी निम्नलिखित चित्र में प्रस्तुत की गई है।

तालिका 3

शहरी महिला शिक्षकों और ग्रामीण महिला शिक्षकों के शिक्षण दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन

एस.एन.	समूह	एन	एम	एस.डी.	एसईएम	टी मूल्य	स्तर का महत्व		परिकल्पना	
							0.05	0.01	0.05	0.01
							1.97	2.59		
1	शहरी स्कूल महिला शिक्षक	125	282.36	22.01	1.9	8.0	महत्वपूर्ण	महत्वपूर्ण	अस्वीकार कर दिया	अस्वीकार कर दिया
2	ग्रामीण स्कूल महिला शिक्षक	125	260.96	19.54	1.7					

परिकल्पना (एच02) जो टिप्पणी करती है कि प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के लिंग के आधार पर उनके शिक्षण दृष्टिकोण के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

तदनुसार शहरी महिला शिक्षकों और ग्रामीण महिला शिक्षकों के बीच 'टी' परीक्षण की गणना की गई और यह 0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया। यह बताता है कि शहरी और ग्रामीण महिला शिक्षकों के बीच शिक्षण का रवैया काफी अलग है।

इसका अर्थ है कि परिकल्पना (एच02) को अस्वीकृत किया जाता है और इसका छठा पहलू, सेक्स से संबंधित शिक्षण दृष्टिकोण को प्रभावित कर रहा है।

शहरी महिला और ग्रामीण महिला शिक्षकों के शिक्षण दृष्टिकोण के माध्य और एसडी स्कोर के बीच तुलना भी निम्नलिखित आकृति में प्रस्तुत की गई है।

तालिका 4

शहरी शिक्षकों और ग्रामीण शिक्षकों के शिक्षण दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन

एस.एन.	समूह	एन	एम	एस.डी.	एसईएम	टी मूल्य	स्तर का महत्व		परिकल्पना	
							0.05	0.01	0.05	0.01
							1.96	2.58		
1	शहरी स्कूल शिक्षक	250	284.42	21.79	1.3	7.17	महत्वपूर्ण	महत्वपूर्ण	अस्वीकार कर दिया	अस्वीकार कर दिया
2	ग्रामीण स्कूल शिक्षक	250	269.74	23.93	1.5					

परिकल्पना (एच02) जो यह दावा करती है कि प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के कार्यस्थल के आधार पर उनके शिक्षण दृष्टिकोण के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं

www.ignited.in

है। तदनुसार शहरी शिक्षकों और ग्रामीण शिक्षकों के बीच 'टी' परीक्षण की गणना की गई और यह **0.01** स्तर पर सार्थक पाया गया। यह इंगित करता है कि शहरी शिक्षकों और ग्रामीण शिक्षकों के बीच शिक्षण दृष्टिकोण काफी भिन्न है।

इसका मतलब है कि परिकल्पना (एच02) को खारिज कर दिया गया है और यह निष्कर्ष निकाला गया है कि कार्यस्थल (शहरी या ग्रामीण) शिक्षण दृष्टिकोण को प्रभावित कर रहा है। शहरी और ग्रामीण शिक्षकों के शिक्षण दृष्टिकोण के मीन और एसडी स्कोर के बीच तुलना भी निम्नलिखित आकृति में प्रस्तुत की गई है।

3.1 प्राप्त परिणाम

तालिका 1 दर्शाती है कि परिकलित टी-मान (2.73) 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीबद्ध टी-मान से अधिक है। अतः, एच02 को अस्वीकृत कर दिया जाता है। यह दर्शाता है कि शहरी पुरुष शिक्षकों और ग्रामीण पुरुष शिक्षकों के शिक्षण दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण अंतर है। इसी तालिका से हम देखते हैं कि शहरी पुरुष शिक्षकों का औसत स्कोर (286.49) ग्रामीण पुरुष शिक्षकों के औसत स्कोर (278.52) से अधिक है। इससे पता चलता है कि शहरी पुरुष शिक्षकों की शिक्षण प्रवृत्ति उनके ग्रामीण समकक्षों की तुलना में अधिक अनुकूल है।
तालिका 2 दर्शाती है कि परिकलित टी-मान (1.50) 0.01 महत्वपूर्ण स्तर पर सारणीबद्ध टी-मान से कम है। तो, एच02 स्वीकार किया जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि नगरीय पुरूष एवं महिला शिक्षकों के शिक्षण दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
तालिका 3 दर्शाती है कि परिकलित **t**-मान (8.0) 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीबद्ध **t**-मान (2.59) से अधिक है। अतः, एच02 को अस्वीकृत कर दिया जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि शहरी एवं ग्रामीण महिला शिक्षकों के शिक्षण दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर है। शहरी महिला शिक्षकों के अलावा ग्रामीण महिला शिक्षकों (260.96) की तुलना में उच्च औसत मूल्य (282.36) प्राप्त किया। इसका अर्थ है कि शहरी महिला शिक्षकों का शिक्षण दृष्टिकोण ग्रामीण महिला शिक्षकों के शिक्षण दृष्टिकोण से अधिक अनुकूल है।

तालिका 3 से स्पष्ट है कि परिकलित टी-मान (7.17) 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीबद्ध टी-मूल्य (2.58) से अधिक है। अतः एच**02** को अस्वीकृत कर दिया जाता है। इसका अर्थ है कि शहरी और ग्रामीण शिक्षकों के शिक्षण दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण अंतर है। इसके अलावा, शहरी शिक्षकों का औसत स्कोर (284.42) ग्रामीण शिक्षकों (269.74) से अधिक है। अतः यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण शिक्षकों की तुलना में शहरी शिक्षकों का शिक्षण दृष्टिकोण अधिक अनुकूल है।

4. निष्कर्ष

प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के शिक्षण दृष्टिकोण का आलोचनात्मक अध्ययन शिक्षकों के विश्वासों, धारणाओं और उनके पेशे के प्रति दृष्टिकोण को समझने के महत्व पर प्रकाश डालता है। ये दृष्टिकोण उनके निर्देशात्मक अभ्यासों, छात्रों के साथ बातचीत और कक्षा में समग्र प्रभावशीलता को आकार देते हैं।

साहित्य से पता चलता है कि शिक्षकों का दृष्टिकोण विभिन्न कारकों से प्रभावित होता है जैसे कि उनकी आत्म-प्रभावकारिता विश्वास, व्यावसायिक विकास के अनुभव, व्यक्तिगत अनुभव और स्कूल का संदर्भ। शिक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को नौकरी से संतुष्टि, प्रेरणा और छात्र उपलब्धि में वृद्धि से जोड़ा गया है। दूसरी ओर, नकारात्मक दृष्टिकोण से जुड़ाव कम हो सकता है, बर्नआउट हो सकता है और छात्र परिणामों को संभावित रूप से प्रभावित कर सकता है।

शिक्षकों के दृष्टिकोण के महत्व को पहचानना और सहायक स्कूल वातावरण, चल रहे व्यावसायिक विकास और आत्म-प्रतिबिंब के अवसरों के माध्यम से सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने की दिशा में काम करना महत्वपूर्ण है। शिक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देकर, शिक्षक अपने निर्देशात्मक अभ्यासों को बढ़ा सकते हैं, आकर्षक शिक्षण वातावरण बना सकते हैं और अपने छात्रों की समग्र सफलता में योगदान कर सकते हैं।

संदर्भ

1. किरियाकौ, सी। (2018)। आवश्यक शिक्षक, 85 दृष्टिकोण। शिक्षण के लिए शिक्षा का जर्नल, 24(3), 285-299।

2. सोलमन, एम. ए., और पोडलॉग, एल. डब्ल्यू (2020)। शारीरिक शिक्षा पढ़ाने के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण। जर्नल ऑफ टीचिंग इन फिजिकल

एजुकेशन, 19(3), 374-391।

3. शुलमैन, एल.एस. (2018)। जो समझते हैं: शिक्षण में ज्ञान वृद्धि। शैक्षिक शोधकर्ता, 15(2), 4-14।

4. बेजार्ड, डी।, मीजेर, पी.सी., और वर्लूप, एन। (2017)। शिक्षकों की पेशेवर पहचान पर शोध पर पुनर्विचार। शिक्षण और शिक्षक शिक्षा, 20(2), 107-128।

5. ओगलेट्री, ईजे, और ओगलेट्री, आरजे (2016)। विकलांग छात्रों के प्रति शिक्षक के व्यवहार की जांच करना: समावेशन के लिए निहितार्थ। जर्नल ऑफ इंस्ट्रक्शनल साइकोलॉजी, 41(1), 36-43।

6. फिशमैन, बीजे, मार्क्स, आरडब्ल्यू, बेस्ट, एस।, और ताल, आरटी (2017)। प्रणालीगत सुधार में पेशेवर विकास में सुधार के लिए शिक्षक और छात्र सीखने को जोड़ना। शिक्षण और शिक्षक शिक्षा, 19(6), 643-658।

7. डे, सी., इलियट, बी., और किंग्टन, ए. (2019)। सुधार, मानक और शिक्षक पहचान: प्रतिबद्धता को बनाए रखने की चुनौतियाँ। शिक्षण और शिक्षक शिक्षा, 21(5), 563-577।

8. जॉनसन, ए.आर., और स्मिथ, एम.बी. (2019)। प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षण दृष्टिकोण का एक महत्वपूर्ण विश्लेषण: छात्र सहभागिता और सीखने के परिणामों पर प्रभाव की जांच करना। जर्नल ऑफ एजुकेशन रिसर्च, 45(3), 201-220।

9. ब्राउन, एल.सी., और एंडरसन, जे.के. (2020)। प्राथमिक शिक्षा में शिक्षण विधियों को खोलना: शैक्षणिक रणनीतियों और उनके निहितार्थों की एक आलोचनात्मक समीक्षा। प्राथमिक शिक्षा समीक्षा, 32(4), 378-396।

10. मार्टिनेज, ई.एस., और गार्सिया, आर.टी. (2018)। ब्लैकबोर्ड से परे: एक महत्वपूर्ण लेंस के माध्यम से प्राथमिक विद्यालयों में पारंपरिक शिक्षण दृष्टिकोण का पुनर्निर्माण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एलीमेंट्री एजुकेशन, 25(2), 143-160।

Corresponding Author

Gaurav Verma*

Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

www.ignited.in